Volume 1; Issue 1
January to March 2025

E-ISSN: 3048-8699

International Journal of History and Culture

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly International Research Journal

International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 1; January to March 2025; Page No. 26-35
Peer Review, Indexed and Refereed Journal

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा और झारखण्ड का गठन

डॉ. संजीता कच्छप
सहायक प्राध्यापिका,
महिला महाविद्यालय सिमडेगा, झारखण्ड

सारांश

पृथक झारखण्ड का गठन विविधताओं से भरा रहा है। झारखण्ड गठन को दिशा देने में सैकड़ों शिक्षाविदों, समाज सेवियों और राजनेताओं का सहयोग रहा था। वास्तव में बिहार से पृथक झारखण्ड राज्य निर्माण औपनिवेशिक नीतियों के कारण उत्पन्न क्षेत्रीय असंतुलन और पिछड़ेपन का परिणाम तो था ही, यह दीकू तत्वों के शोषण का भी परिणाम था जिन्होंने सत्ता के संरक्षण में झारखण्ड क्षेत्र को अपना उपनिवेश समझ लिया था। पृथक झारखण्ड की मांग सर्वप्रथम 1912 ई. में ढाका छात्र संघ ने किया था। इस संघ के मुख्य नेता थे जे. बोर्थोलोमन। झारखण्ड के गठन में आगे चलकर आदिवासी महासभा, छोटानागपुर उन्नति समाज, किसान सभा, कैथोलिक सभा, झारखण्ड पार्टी इत्यादि का भी योगदान रहा था। पृथक झारखण्ड की मांग में बिरसा सेवा दल के उग्रवाद के बाद झारखण्ड आन्दोलन में भाग लेने वाला झारखण्ड मुक्ति मोर्चा दूसरा लड़ाकू संगठन था। सोनोत संथाली समाज और शिवाजी समाज नाम के दो संगठन क्रमशः शिबू सोरेन और बिनोद बिहारी महतो के नेतृत्व में कार्यरत थे। इन दोनों ने मिलकर झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का गठन 4 फरवरी 1973 ई. को किया था। इस राजनीति दल को मार्क्सिस्ट को आर्डिनेयन कमेटी के नेता ए. के. राय ने वैचारिक समर्थन प्रदान किया था। बाद में ए. के. राय इसकी प्राणशक्ति बन गए। शिबू सोरेन, विनोद बिहारी महतो और ए. के. राय की तिकड़ी ने पृथक झारखण्ड आंदोलन को काफी तेजी से आगे बढ़ाया था।

विशिष्ट शब्द – झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, मार्क्सिस्ट को आर्डिनेयन कमेटी, सोनोत संथाली समाज, छोटानागपुर उन्नति समाज, शिवाजी समाज

भूमिका

पृथक झारखण्ड का गठन विविधताओं से भरा रहा है। झारखण्ड गठन को दिशा देने में सैकड़ों शिक्षाविदों, समाज सेवियों और राजनेताओं का सहयोग रहा था। वास्तव में बिहार से पृथक झारखण्ड राज्य निर्माण औपनिवेशिक नीतियों के कारण उत्पन्न क्षेत्रीय असंतुलन और पिछड़ेपन का परिणाम तो था ही, यह दीकू तत्वों के शोषण का भी परिणाम था जिन्होंने सत्ता के संरक्षण में झारखण्ड क्षेत्र को अपना उपनिवेश समझ लिया था। पृथक झारखण्ड की मांग सर्वप्रथम 1912 ई. में ढाका छात्र संघ ने किया था। इस संघ के मुख्य नेता थे जे. बोर्थोलोमन। झारखण्ड के गठन में आगे चलकर आदिवासी महासभा, छोटानागपुर उन्नति समाज, किसान सभा, कैथोलिक सभा, झारखण्ड पार्टी इत्यादि का भी योगदान रहा था। पृथक झारखण्ड की मांग में बिरसा सेवा दल के उग्रवाद के बाद झारखण्ड आन्दोलन में भाग लेने वाला झारखण्ड मुक्ति मोर्चा दूसरा लड़ाकू संगठन था। सोनोत संथाली समाज और शिवाजी समाज नाम के दो संगठन क्रमशः शिबू सोरेन और बिनोद बिहारी महतो के नेतृत्व में कार्यरत थे। इन दोनों ने मिलकर झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का गठन 4 फरवरी 1973 ई. को किया था। इस राजनीति दल को मार्क्सिस्ट को आर्डिनेयन कमेटी के नेता ए. के. राय ने वैचारिक समर्थन प्रदान किया था। बाद में ए. के. राय इसकी प्राणशक्ति बन गए। शिबू सोरेन, विनोद बिहारी महतो और ए. के. राय की तिकड़ी ने पृथक झारखण्ड आंदोलन को काफी तेजी से आगे बढ़ाया था।

तथ्य विष्लेषण

आदिवासी नेता और जनजातीय संस्कृति व परम्परा का प्रतीक शिबू सोरेन एवं समाजवादी नेता विनोद बिहारी महतो ने झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की स्थापना बिरसा मुण्डा के जन्म–दिवस पर 15 नवम्बर 1972 ई॰ को मार्क्स वादी समन्वय समिति के सहयोग से की थी। 14 फरवरी 1973 ई॰ को इसका विधिवत गठन हुआ

था। विनोद बिहारी महतो को झारखंड मुक्ति मोर्चा का अध्यक्ष एवं शिबू सोरेन को सचिव नियुक्त किया गया था। इसके पूर्व शिबू सोरेन ने 1969 ई॰ में सोनत संथाली समाज की स्थापना की थी। इस समाज के प्रमुख उदेश्य थे – पारम्परिक रीति–रिवाजों और प्रथाओं का पुनः प्रचलन, नशापान, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों का उमूलन, महाजनों एवं अन्य लोगों द्वारा गैर कानूनी ढंग से ली गई भूमि की वापसी, संथाली भाषा का विकास, रात्रि पाठशाला के द्वारा युवा और बूढ़ों के बीच शिक्षा प्रचार इत्यादि।1

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा सक्रिय राजनीति में सफल भी रहा था तथा इस दल ने झारखण्ड आंदोलन का नेतृत्व भी सफलता से किया है। 1975 ई॰ में देश में लगाये गये आपातकाल में शिबू सोरेन तथा विनोद बिहारी महतो दोनों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में कुछ मुद्दों को लेकर इस दल में मतभेद उत्पन्न हो गया तथा यह दल दो भागों में विभाजित हो गया था इन कारणों से झारखण्ड आन्दोलन कुछ समय के लिए कमजोर भी हो गया था इसके बावजूद इस दल ने पृथक झारखण्ड का मुद्दा नहीं छोड़ा था तथा शिबू सोरेन को इस मुद्दे पर व्यापक समर्थन मिला था। उन्होंने झारखण्ड सहित पूरे बिहार की राजनीति में भी सफलता प्राप्त की थी। अन्य दलों की असफलता के बीच झारखण्ड राज्य में एक नये दल का उदय हो रहा था, जिसके मुख्य प्रणेता शिबू सोरेन और विनोद बिहारी महतो थे, शिबू सोरेन सोनोत संथाल समाज और विनोद बिहारी महतो शिवाजी समाज के नेता थे। शिबू सोरेन आदिवासी संस्कृति और परम्परा के प्रतीक थे। उन्होंने प्रारम्भ में महाजनी प्रथा के खिलाफ, शराबबंदी, सामूहिक खेती और आदिवासी शिक्षा का अभियान चलाया जिससे जनजातीय समाज में आशा की नई किरण जग गई थी।

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के गठन के बाद झारखण्ड में आन्दोलन एक नए दौर में प्रवेश कर गया था। यह दौर आक्रामक आन्दोलन का था। शिबू सोरेन मोर्चा के महासचिव और विनोद बिहारी महतो अध्यक्ष थे। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का नाम बांग्लादेश मुक्ति वाहिनी से प्रभावित होकर रखा गया था, जिसने 1971 ई॰ में बांग्लादेश को पाकिस्तान के चंगुल से आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के गठन के साथ ही शिबू सोरेन का सोनोत संथाल समाज और विनोद बिहारी महतो का शिवाजी समाज, इस मोर्चा में विलीन हो

गए। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का पहला खुला अधिवेशन 4 फरवरी 1973 ई॰ को धनबाद में हुआ था और इसे प्रथम स्थापना दिवस के तौर पर मनाया गया था। इस अधिवेशन में झारखण्ड को तेइसवाँ राज्य बनाने की माँग भारत सरकार से करने का प्रस्ताव पारित किया गया था जिसे शिबू सोरेन ने पेश किया था। इस अधिवेशन में कहा गया कि यदि भारत सरकार झारखण्ड को बिहार से अलग नहीं करेगी, तो झारखण्ड मुक्ति मोर्चा एक क्रांतिकारी आन्दोलन चलाएगा। वैसे भी शिबू सोरेन सूद खोरी और महाजनी के खिलाफ संथाल में क्रांतिकारी आंदोलन चला चुके थे।

झारखण्ड को बिहार से अलग कर इसे स्वतंत्र राज्य बनाने के समर्थन में जुलूस, धरना, सभा, ज्ञापन देने का भी निर्णय लिया गया था। जल्द ही पृथक झारखण्ड की मांग का आंदोलन गाँव, शहर और जंगल तक पहुँच गया था। इससे बिहार सरकार बेचैन हो उठी थी। मीसा अधिनियम के तहत बिनोद बिहारी महतो गिरफ्तार कर लिए गए। इसकी निंदा करते हुए झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने शिबू सोरेन के नेतृत्व में हुँकार भरी, जेल का ताला टूटेगा, विनोद बाबू छूटेगा। झारखण्ड राज्य अलग करो, बिहार का शासन नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।3

शुरू के दिनों में ए॰ के॰ राय के मार्क्सवादी को–अरडिनेशन कमिटि ने भी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का समर्थन किया था। ए॰ के॰ राय ने शिबू सोरेन से मिलकर पृथक राज्य के संघर्ष को जारी रखा था । इन दोनों के मिलने से श्रमिकों और किसानों के नये आंदोलन का सूत्रपात हुआ था। इस गठबंधन ने सभी झारखण्ड वासियों को एक सूत्र में बाँधने और दिकू को निकालने का निरंतर प्रयास किया था। इन दोनों दलों ने झारखण्ड लालखण्ड का नारा बुलंद किया था। स्वतंत्र राज्य की स्थापना के लिए दर्जनों प्रदर्शन किये गये थे। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के स्थापना के तुरंत बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने आपातकाल लगा दिया था। 1975 ई. से 1977 ई. की इस अवधि के दौरान झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के नेता शिबू सोरेन और विनोद बिहारी महतो को गिरफ्तार कर लिया गया था 4। इस प्रकार आंदोलन का उग्र स्वरूप दमन का कारण बना और कुछ दिनों तक झारखण्ड आंदोलन सुषुप्त हो गया क्योंकि शीर्षस्थ नेता जेल में बंद थे। इस तरह जल्द ही झारखण्ड आंदोलन में मार्क्सवादी समन्वय समिति के नेता ए.के.

राय भी जुड़ गए एवं झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का जनाधार बढ़ने लगा था। सूरज मंडल भी इसमें शामिल हो गए थे। पृथक झारखण्ड की चाह रखने वाले लोग झारखण्ड मुक्ति मोर्चा से जुड़ने लगे थे। आदिवासी या गैर–आदिवासी बैरियर नहीं थे। अतः सभी लोगों के बीच झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की लोकप्रियता बढ़ने लगी और इसे झारखण्ड आंदोलन का पर्याय माना जाने लगा था।5

1976–1977 ई में झारखण्ड राज्य के सपने साकार करने हेतु झारखण्ड के विभिन्न दल फिर से सामने आये थे। झारखण्ड पार्टी, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, भारतीय मार्क्सवादी पार्टी इत्यादि दलों ने एक संयुक्त मोर्चा बनाया था। इनका नया नारा था– खून दो, हम आजादी देगे। इस प्रकार पृथक झारखण्ड राज्य के निर्माण हेतु नये सिरे से प्रयास किये गये थे।6 1975 ई. के आपातकाल के बाद 1977 ई. में केंद्र की सत्ता में आई जनता पार्टी की सरकार ने झारखण्ड आंदोलन के ज्वार को और भी बढ़ा दिया। जनता पार्टी की सरकार ने सत्ता के विकेन्द्रीकरण का सूत्र सुझाया था। उसने चिर–परिचित झारखण्ड आन्दोलन को प्राणवायु प्रदान किया और इस क्षेत्र के विधायक सांसद उसे पाने के लिए आतुर हो उठे थे। इस प्राणवायु को तत्कालीन बिहार के मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर ने जब रोकने की कोशिश की तो जनसंघ के विधायक ललित उराँव के नेतृत्व में संघर्ष समिति गठित की गई थी। राँची में विशाल जुलूस निकाली गई और जनसभा की गई थी। बुलंद आवाज में वक्ताओं ने कहा, ''झारखण्ड को बिहार से अलग करों, झारखण्ड लेकर रहेंगे। जय झारखण्ड''। इस प्रकार इस प्रदर्शन ने बिहार के छोटानागपुर–संथाल परगना के विधायकों एवं सांसदों पर भी दबाब डाला और पचास जनप्रतिनिधियों ने सरकार को चेतावनी दे डाली कि यदि पृथक राज्य बनाने की माँग नहीं मानी गई तो वे सरकार को गिरा देंगे और पूरे छोटानागपुर–संथाल परगना क्षेत्र में संपूर्ण क्रांति करेंगे। तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर ने दो–टूक शब्दों में कह दिया कि पृथक राज्य उन्हें नामंजूर है।7

आपातकाल के समाप्ति के पश्चात सम्पन्न चुनाव में कांग्रेस विरोधी लहर तेज थी। फलस्वरूप कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया था। लगभग सभी झारखण्ड के राजनीतिक दल पृथक झारखण्ड के समर्थन में एकजुट होने लगे। इस बीच केन्द्र की सरकार में तत्कालीन गृहमंत्री चौधरी चरण सिंह ने राज्यों के पुनर्गठन

सम्बंधी बयान दिये थे। जनता पार्टी के चुनावी घोषणा पत्र में भी सत्ता के विकेन्द्रीकरण की बात डाली गई थी। गृह मंत्री चौधरी चरण सिंह का वक्तव्य इस परिपेक्ष्य में एक सकारात्मक कदम था। पृथक राज्य अब केन्द्र सरकार के एजेंडा में शामिल हो चुका था। लगभग इसी समय झारखण्ड राज्य के भौगोलिक स्वरूप पर एक बहस चल पड़ी थी। एक गुट छोटानागपुर–संथाल परगना को मिलाकर झारखंड राज्य बनाना चाहता था। लेकिन झारखण्ड पार्टी के नेता एन॰ ई॰ होरो ने इसका विरोध करते हुए वृहत झारखण्ड बनाने पर बल दिया था। इस वृहत झारखण्ड में पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रदेश के जिले शामिल थे। जनता पार्टी ने भी बिहार का बटवारा करके ही अलग राज्य बनाने का समर्थन किया था।8

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस समय झारखण्ड के बुद्धिजीवी भी आंदोलन से जुड़ने लगे थे। उन्होंने झारखण्ड आंदोलन को वैचारिक और युक्ति संगत आधार प्रदान करने के लिए 6 एवं 7 मई 1978 ई. को रांची में झारखण्ड क्षेत्रीय बुद्धिजीवी सम्मेलन बुलाया गया था। इस सम्मेलन में वृहत् झारखण्ड के तमाम छोटानागपुर संथाल परगना को लेकर ही पृथक राज्य बनाए जाने की वकालत की गई और इसके लिए प्रस्ताव पारित किया गया था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता शुभनाथ देवगम ने की थी। इस सम्मेलन में शिबू सोरेन, विनोद बिहारी महतो, घनश्याम महतो, डॉ राम दयाल मुंडा , बी॰ पी॰ केसरी , डॉ निर्मल मिंज, वीर भारत तलवार , झारखण्ड पार्टी के नेता एन॰ ई॰ होरो, साहित्कार राधाकृष्ण सहित सैकड़ों की संख्या में प्रोफेसर, वकील, चिकित्सक, इंजीनियर, छात्र और झारखंड आंदोलन के शुभचिंतक उपस्थित थे।

बुद्धिजीवी सम्मेलन ने झारखण्ड आंदोलन को नई चेतना दी। अब छात्र भी आंदोलन में कूद पड़े। करमा उराँव और शामखाम मुर्मू ने युवा और छात्रों का नेतृत्व किया। रांची में छात्रों का एक सम्मेलन बुलाया गया था। इसमें युवा छात्र मोर्चा जमशेदपुर, छोटानागपुर–संथाल परगना छात्र संघर्ष समिति चाईबासा और छोटानागपुर छात्र संघ, राँची सहित पूरे अंचल के छात्रों ने भाग लिया था। सभी छात्र संगठनों को मिलाकर छोटानागपुर संथाल परगना युवा छात्र मुक्ति संघ का गठन किया गया था। संघ का घोषणा था। पक्ष जारी किया गया और अलग झारखण्ड आन्दोलन के लिए छात्रों को तत्पर रहने को कहा

गया। संघ का एक झंडा भी तैयार किया गया जो ऊपर लाल और नीचे हरा था। इस प्रकार हम कह सकते है कि 1978 ई. का वर्ष झारखंड आंदोलन के लिए मील का पत्थर साबित हुआ था।इस कारण इसे झारखंड आंदोलन का वर्ष कहा जाता था। यह वह वर्ष था, जब आंदोलन को सभी वर्गों का औपचारिक समर्थन प्राप्त हुआ और आंदोलन में सभी शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक रूप से शरीक होना चाहते थे।9

इस प्रकार 4 फरवरी, 1973 ई. को विनोद बिहारी महतो की अध्यक्षता में झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन धनबाद में किया गया एवं शिबू सोरेन इसके महासचिव बनाए गए थे। मार्क्सवादी समन्वय समिति के ए॰ के॰ राय ने भी झारखंड मुक्ति मोर्चा के गठन में अपना सहयोग दिया था। झारखंड मुक्ति मोर्चा शुरू से ही अलग झारखंड के लिए प्रतिबद्ध थी एवं उसके उद्देश्य में पृथक झारखंड की माँग शामिल था। शिबू सोरेन एवं विनोद बिहारी महतो की जोड़ी के कारण जल्द ही पार्टी आदिवासी, महतो एवं मुस्लिम समाज में लोकप्रिय हो गई और इसका फायदा उसके पृथक राज्य आंदोलन को मिला। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने नारा दिया – 'बोतल तोड़ो झारखंड छोड़ो'। पहला नारा आदिवासीयों के लिए था और दूसरा उन बाहरियों के लिए जो दीकू थे। शीघ्र ही झारखंड मुक्ति मोर्चा की सभाओं में हजारों लोग जमा होने लगे थे। संथाल परगना और छोटानागपुर के हजारों लोग इस पार्टी से जुड़ गए और उसके पृथक राज्य के आंदोलन के अंग बन गए थे। देहाती क्षेत्रों में अनाज का गोला बनवाने एवं किसानों को कम ब्याज पर अनाज देने की व्यवस्था सहकारी खेती एवं जन–न्यायालय की स्थापना जैसे कार्यो से झामुमो का जनाधार बढ़ने लगा था। पार्टी द्वारा अपने प्रत्यक्ष कारवाई में नारा दिया जाने लगा– दिकू झारखंड छोड़ो।

झारखंड मुक्ति मोर्चा का आंदोलन उग्र होता था। झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी ने झारखंड राज्य के निर्माण के लिए कई उग्र प्रदर्शन किए, आर्थिक नाके बंदी की और इसमें हिंसा एवं तोड़–फोड़ की घटनाएँ होती थी। इस प्रकार झारखंड मुक्ति मोर्चा अब झारखंड आंदोलन का एक मात्र बड़ा चेहरा बन चुकी थी। झारखंड पार्टी अब गौण हो चुकी थी। ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू) भी प्रारम्भ में झारखंड मुक्ति मोर्चा की छात्र इकाई थी, जो बाद में उससे अलग हो गई थी। अतः झारखंड मामलों की जो

समिति केन्द्र सरकार ने बनाई, उसमें उसके नेताओं को प्रमुख स्थान दिया गया था। साथ ही 1995 ई में गठित झारखण्ड क्षेत्र स्वायत्तशासी परिषद् का अध्यक्ष शिबू सोरेन को बनाया गया था। स्वायत्तशासी परिषद् में भी झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी का बहुत प्रभाव था क्योंकि स्वायत्तशासी परिषद के उपाध्यक्ष सूरज मंडल भी इसी पार्टी के थे।

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा शीघ्र ही स्वायत्तशासी परिषद से असंतुष्ट हो गई और सरकार की आलोचक बन गई थी। इस बीच झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने पृथक झारखण्ड राज्य के लिए बंद, प्रदर्शन, हड़ताल एवं आर्थिक नाकेबंदी का दौर शुरू किया। जिसमें व्यापक जनसमर्थन मिला। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का मानना था कि स्वायत्तशासी परिषद् पृथक झारखण्ड राज्य की राह का एक पड़ाव मात्र है और पार्टी का अंतिम लक्ष्य बंगाल, बिहार, उड़ीसा और मध्यप्रदेश के भू–भाग वाला वृहत् झारखण्ड राज्य है। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के अनुसार पर्याप्त और समुचित वित्तिय और प्रशासनिक अधिकार के बिना सदियों से शोषित और उपेक्षित झारखण्ड की जनता की शोषण मुक्ति और विकास की गति में वह गति नहीं आ पाएगी। अतः इस पिछड़ा क्षेत्र में समता और सम्पन्नता लाने के लिए अलग झारखण्ड अनिवार्य था।10

आपातकाल के शासन काल की दमनात्मक नीतियों के कारण विभिन्न राजनीतिक दलों को एकजुट होने का मौका मिला था। 21 मार्च 1978 ई॰ को झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के महासचिव शिबू सोरेन और मार्क्सवादी समन्वय समिति के सांसद ए॰ के॰ राय के नेतृत्व में एकीकृत बिहार की राजधानी पटना में आदिवासीयों ने विशाल जुलूस निकाला था। पुनः केन्द्र में 1977 ई. में बनी गैर कांग्रेसी सरकार का पतन 1980 ई में हो गया एवं इसी वर्ष जनता पार्टी की चुनावी हार से झारखण्ड आन्दोलन को झटका लगा था। इस चुनाव में शिबू सोरेन लोकसभा सदस्य बने थे। इसके बाद हुए बिहार विधानसभा चुनाव में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के 13 विधायक निर्वाचित हुए थे। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के विधायक मंत्री बनने का प्रयास करने लगे थे। इस अवधि में मार्क्सवादी समन्वय समिति के साथ झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का अनबन हो गया था और दोनों के रास्ते अलग हो गये थे।11

अन्दरूनी कारणों से झारखण्ड मुक्ति मोर्चा दो खंडों मे बँट गया था। एक गुट का नेतृत्व शिबू सोरेन करने लगे

और दूसरे गुट का नेतृत्व मरान्डी। इधर विनोद बिहारी महतो मार्क्सवादी समन्वय समिति के नेता ए. के. राय के साथ चले गये थे। झारखण्ड पार्टी लगभग लुप्त हो गया और 1984 में इसके सिर्फ एक नेता एन. ई. होरो ने चुनाव जीता था। उस चुनाव में शिबू सोरेन, ए. के. राय, विनोद बिहारी महतो जैसे दिग्गज चुनाव हार गये थे। इस चुनावी पराजय का मुख्य कारण इंदिरा गाँधी की हत्या और उससे उत्पन्न सहानुभूति चुनावी लहर थी। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने 1997 ई में लालू प्रसाद यादव की सरकार को समर्थन दिया था, परंतु लालू प्रसाद यादव झारखण्ड आन्दोलन के विरोधी थे। लालू प्रसाद यादव के तिकड़म के कारण अलग झारखण्ड राज्य के गठन से संबंधित विधेयक 1998 ई में बिहार विधानसभा में पारित नहीं हो पाया था। फलतः झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने अपना समर्थन वापस ले लिया था बाद में 2000 ई में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने दोबारा झारखण्ड राज्य के गठन संबंधित विधेयक बिहार विधानमंडल को भेजा था। यह विधेयक पारित हो गया और झारखण्ड के गठन का रास्ता साफ हो गया था।

इस प्रकार झारखण्ड मुक्ति मोर्चा झारखण्ड आन्दोलन का सबसे बड़ा चेहरा था। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा का ही प्रयास था कि झारखण्ड आन्दोलन न केवल जिन्दा रहा बल्कि दीकू ताकतों का शिकार नहीं हो पाया। अवसर तो झारखण्ड मुक्ति मोर्चा को बहुत बार आया था परंतु यह पार्टी अविचल खड़ा रहा था। आंदोलन की बागडोर को इस पार्टी ने कभी ढीला नहीं छोड़ा और ना ही किसी अन्य को नेतृत्व करने दिया था। यह भी सही है कि झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने झारखण्ड को नया जीवन दिया जिसपर सवार होकर उसके नेताओं ने सत्ता का स्वाद चखा। शिबू सोरेन झारखण्ड के दिशोम गुरू बने और झारखण्ड के मुख्यमंत्री भी बने थे। उनके पुत्र हेमंत सोरेन भी मुख्यमंत्री बने थे। वर्तमान समय में भी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा झारखण्ड विधानसभा में मुख्य विरोधी नेता की भूमिका में बनी हुई है और भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रीय दल को चुनौती दे रही है। दिसम्बर 2019 के चुनाव में पुनः झारखण्ड मुक्ति मोर्चा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं जनता दल ने मिलकर चुनाव लड़ा एवं जीता भी। इस प्रकार दिसम्बर 2019 में हेमंत सोरेन झारखण्ड के मुख्यमंत्री बने।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. वर्मा, वी.पी. निर्वाचन और राजनीति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1978, पृष्ठ–231
2. अहमद, इमत्याज बिहारः एक परिचय, नेशनल पब्लिकेशन, पटना, 1994, पृष्ठ–176–77
3. महतो, शैलेन्द्र झारखण्ड की समरगाथा, निधि बुक्स, दिल्ली, 2011, पृष्ठ–23
4. भट्ट, ए.के. द डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झारखण्ड, गन पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, 2002, पृष्ठ–281
5. भट्ट, ए.सी. द डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झारखण्ड, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ–281–82
6. बनर्जी, मानगोविन्द छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूपरेखा, एडुकेशन प्रिंट, राँची, 2000, पृष्ठ–178
7. बनर्जी, मानगोविन्द छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूपरेखा, पूर्वोद्धृत, पृष्ठ–178–79
8. अरीप्रमिपल, मैथीयू स्ट्रगल फॉर स्वराज, टी.आर.आई. राँची, 2002, पृष्ठ–56
9. अरीप्रमिपल, मैथीयू स्ट्रगल फॉर स्वराज, टी.आर.आई. राँची, 2002, पृष्ठ–58–59
10. तिर्की, सिकरादास झारखण्ड का इतिहास, व्यास केरकेट्टा फाउंडेशन, राँची, 2015 पृष्ठ–74
11. सिंह, अमर कुमार जोहार झारखण्ड, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ–193